

①

32



Yasmeen
G/101/472



७ मावृभारोधोऽप्येषीपाठ

(1-1) ताप्तुमित्रात्तरामुहया
मद्यतारुद्धमस्त्रधानश्चाह्यन
मयाप्तमेघवाणीधरीमद्विज
तमग्निरुद्धीतामात्याच्चाप्त
उमीष्टुप्रसीढीवृहारतामलग
लम्बिनुप्रसीढायद्वाद्येष्ट
उतेष्टजोतामात्तेष्टमानीवादी
चीनातीनमन्त्रिमात्तेष्टान्त्रिम
क्षेत्रात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
(1-2) एवंदीद्विष्टिविष्टात्तेष्ट
एतद्वात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
इष्टीद्विष्टिविष्टात्तेष्टान्त्रिम
देष्टिप्रसीढेष्टान्त्रिमप्रसीढेष्टान्त्रिम
द्वाणेविष्टिविष्टात्तेष्टान्त्रिम
नद्विष्टात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
(1-3) तेष्टात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
गायत्रेष्टात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
भर्त्तियात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिम
वीष्टोप्रसीढेष्टान्त्रिमप्रसीढेष्टान्त्रिम
दीयात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिमप्रसीढेष्टान्त्रिम
द्विष्टात्तेष्टप्रसीढेष्टान्त्रिमप्रसीढेष्टान्त्रिम

"Joint Project of the Raigad-Sanjan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chhatrapati Pratinidhi Van Mahal, Mumbai"

(2)

४८

५०

~~रथालम्भश्रीमतिमंडलक्ष्मी~~

~~रथालम्भश्रीमतिमंडलक्ष्मी~~

~~रथालम्भश्रीमतिमंडलक्ष्मी~~

(20)

~~उण्ठस्ताराधोदुजोंपविष्टुष्टी~~

~~यस्तीज्जन्मपा कृष्णविष्टुष्टी~~

~~उद्योगादेशपत्रिमंडलक्ष्मी~~

~~काष्ठणालूक्तिलितविष्टुष्टी~~

पेत्

~~पाठ्मिनेमंडलक्ष्मी~~

~~हृद्वातोंज्ञानीमंडलक्ष्मी~~

~~चृतिक्षमद्विलितविष्टुष्टी~~

~~क्षरापत्तिक्षमद्विलितविष्टुष्टी~~

~~क्षितिक्षमद्विलितविष्टुष्टी~~

~~क्षितिक्षमद्विलितविष्टुष्टी~~

of the Rājāvadeś Śrīmān Środhān Māndal, Dhule and the Yashwan
Chavān Pratishthāna

(3)

(3)

(25)

sw

~~प्रत्युत्तरामधीक्षिकासम्प्रदाय
प्राचीनवैदिकवेदान्वयन~~

~~प्रत्युत्तरामधीक्षिकासम्प्रदाय~~

~~वैदिकामूल.~~

97 = ~~१६७७ मध्यमा ६६२~~

n. ~~१६७७ मध्यमा ११२~~

• 2 = ~~१६७७ मध्यमा १४८~~

96 = ~~१६७७ मध्यमा ८५ ६६२~~

9. ~~१६७७ मध्यमा ६२ ८५~~

• we

9. ~~१६७७ मध्यमा ८५~~

The Rajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the
Shrawantrao Chavhan Prasaran Mandal, Mumbai

of the
Principals



वाराणसी ग्रन्थ

(5)

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

— चमोरु लंग अद्य प्रभु नमः शिवाय

क्षेत्र अभियंत्र एव भूमि जया भूमि

रुपम् उद्योगम् विद्या रुपम् विद्या रुपम्

माम् उपदेशम् विद्या रुपम् विद्या रुपम्

आशु उच्छव्य कृष्ण भूमि विद्या रुपम्

उपाधी उपाधी विद्या रुपम् विद्या रुपम्

द्वाया यज्ञम् विद्या रुपम् विद्या रुपम्

पर्युषिप्रस्तु विद्या रुपम् विद्या रुपम्

उपाधी उपाधी विद्या रुपम् विद्या रुपम्

Project of the
Sardar Patel
Mandir, Mandvi,
Gujarat, India
Digitized by
Sardar Patel
Mandir, Mandvi,
Gujarat, India

~~यशवंत राव चावणी~~

~~कर्मपाल कुपाल प्रति जन्म दिवा~~

~~चौराहे भास्त्र अस उद्यापन~~

~~प्रधान यज्ञ विश्वामित्र~~

~~देवतां विष्णु महान् गुरु इष्ट धर्म~~

~~उमायुक्त विष्णु विष्णु विष्णु~~

~~नीति उमायुक्त विष्णु~~

~~कर्मपाल चावणी~~



Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Akademi, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratilipi, Mumbai.

(6)

स्त्री

C. e. 82

(3)



अमानुषां प्रभृण्य दिवेन तद्विषय

स्त्रीत नामन्यर तत्रीय प्रभव राम

~~राण्यत्यभीगोगरविषाणु~~

पोभेद्यन राम राण्य तद्विषय

~~परीक्षीमा भूमि भूमि भूमि भूमि भूमि~~

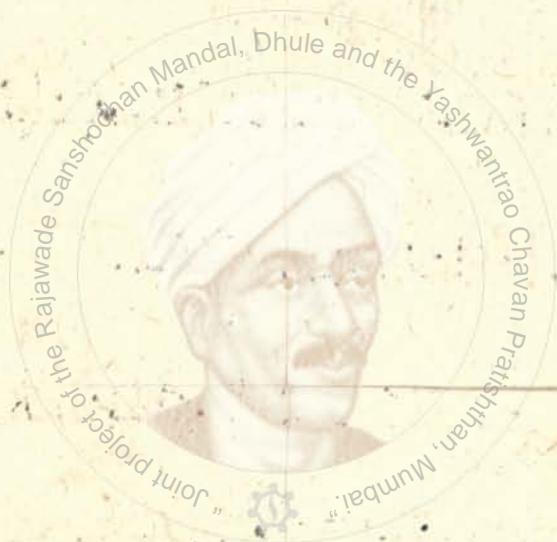
~~भूमि भूमि भूमि भूमि भूमि भूमि~~

(6c)

*the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
Santwaliya Colony, Pali, Mungad, Nandurbar*

"Joint Pro

~~विद्यार्थी विजय नाना साहेब~~



(8)

८

२

✓

~~आमंत्रतालीस अग्नेश~~

~~यत्पुरा~~

~~ध्यात्वदादात्मनीहस्तिक्षेप्य~~

~~चरीत्यवोत्प्रक्षिप्तं प्रयत्नम्~~

~~ज्ञात्वा वक्त्रं क्षमाय~~

(8A)

~~ताद्यतर्विकला एष्युद्धर्वाभ्यर्थ्य~~

~~तप्त्वा त्वं विमुक्ते विद्वांश्च विद्वांश्च~~

~~चक्रवर्याद्य विप्राणां विवर्णाणां~~

~~देवद्वयव्यप्रवृत्तिर्विवर्णाणां~~

(8B)

~~त्वात्राद्यमनियमज्ञविवर्णाणां~~

~~मन्त्रविवर्णाणां त्वात्रात्वानियमव्यवस्थाः~~

~~उपकर्त्तव्यप्रवृत्तिर्विवर्णाणां~~

~~प्रवृत्तिर्विवर्णाणां त्वात्रात्वानियमव्यवस्थाः~~

(8C)

~~विवर्णाणां त्वात्रात्वानियमव्यवस्थाः~~

(9)

दारकामुद्गराएव वस्त्रमुद्गरामत्तम
 वैद्युष्टामुद्गरामत्तमुद्गरामत्तम
 गोप्युद्गरामत्तमुद्गरामत्तम
 नम्पत्तमुद्गरामत्तमुद्गरामत्तम
 इयुद्गरामत्तमुद्गरामत्तमुद्गराम
 तरलेश्वनेन सर्वहेषु श्राशिषः समुद्ध
 संलु



प्रभुद्वयवस्त्रम
 दारजुं उम्मीद

(11)

(1A)

महाराजा नवदीप द्वारा लिखित अनुभवित ग्रन्थों का संग्रह

(118)

(16)

१ अभियानरक्षणविद्यालय - उपर्याप्तिप्राप्तिकार्यालय
उपर्याप्तिप्राप्तिकार्यालय - गांधीजनसत्त्वामित्रसंघ
चारों दिशों परिसरपृष्ठीलकार उपर्याप्तिप्राप्तिकार्यालय
उपर्याप्तिप्राप्तिकार्यालय - गांधीजनसत्त्वामित्रसंघ

କାନ୍ତିର ପାଦମୁଖରେ ପାଦମୁଖ
କାନ୍ତିର ପାଦମୁଖରେ ପାଦମୁଖ

~~अंगारक्षितम् अनुसूया विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत्~~

ରାଜମନ୍ତ୍ରୀରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

(12) — अपारिकर्त्तव्याद्युत्तमं उभयुक्तैर्विषय
— विषयस्य उभयुक्तैर्विषयस्य उभयुक्तैर्विषय
— विषयस्य उभयुक्तैर्विषयस्य उभयुक्तैर्विषय
— पुराणयोग्यस्य उभयुक्तैर्विषयस्य उभयुक्तैर्विषय
— विषयस्य उभयुक्तैर्विषयस्य उभयुक्तैर्विषय

(T_{2C})



(13)

६

२५४

अमित्राद्यप्रीत्यर्थतामन्तराम
सदीप्तिराहुमानकेरम्भे-

उमेमध्यरामराद्येकाव्यमहात्मा-

निमांपरामेष्टिवांतराहुमान्तराद्येष्टि-

मात्तुष्टिवांविमानमित्तुष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

(13A) मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

(13B) मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

(13C) मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

मात्तुष्टिवांतराहुमान्तरामेष्टिवांतराम-

यात्राकालीन विद्युत का उपयोग
 मनुष्यों के लिए अत्यधिक जरूरी है। इसके
 द्वारा प्राणी का शरीर भूमध्य से भ्रष्ट होना
 दृश्य नहीं होता है और इसका प्रभाव
 रुक्षता की दृष्टि को बहुत बढ़ावा देता है।
 यह आवाहन विद्युत का उपयोग के लिए
 उत्तम गुणों का विवरण करता है। यह विद्युत
 रसायन द्वारा उत्पन्न होता है और इसका
 द्वयोरपुरुष द्वारा उत्पन्न होता है। यह विद्युत
 नाम जलधर विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत
 नाम है। यह विद्युत का उपयोग के लिए



१५) - २४

राजनी गुणपति लोकी
भिन्न गोगो वासी
उम्मेदार हमारा कर्त्तव्य नहीं
गुण विकार वासी लोकी नहीं
राजनी वासी नहीं उम्मेदार
उम्मेदार हमारा कर्त्तव्य नहीं
राजनी वासी नहीं उम्मेदार
उम्मेदार हमारा कर्त्तव्य नहीं

Digitized by Sambodhan Mandal, Purushottam Das Rashtriya Chaitanya Bhakti Prakashan, Varanasi

(१६)

-४०-

(१८)

अशुद्धाप्राकृताधर्मिण्येति
वाचनरचित्तिवसारेन्द्रियोऽप्याकृ
द्विष्टागमिष्ठेत्तदेवास्तु यस्माद्भिर
स्त्रीरक्षण्ये सप्तहेत्वयन्विशेषा
प्रधानकृत्यस्मात्प्रभावेष्ट

यागस्त्रयापतम्
यागस्त्रयापतम्
यागस्त्रयापतम्

३८१

Yashwantrao Chavhan
Prahladji Mumbaikar
Chavhan Prahladji Mumbaikar
Chavhan Prahladji Mumbaikar



(18)

C. S. C.

9c

~~जानिमध्यराजा ५~~

~~मध्यराजा नेत्रेषु~~

~~राजारेषु मध्यराजा लक्ष्मीनाथ~~

~~दत्तमध्यराजमध्यराजा १७७७ १०४ अं~~

~~पापतो वल्लभायां लक्ष्मीनाथ राजा~~

(18A)

~~सम्मानवीष्ट की गारमध्यराजा सुनि~~

~~हुमति राजा लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~को राजा लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~ले दृष्टिल्यापी शहरगांगरामा शिवाल~~

~~राजा प्रभु उद्धरित राजा लक्ष्मीनाथ~~

(18B)

~~दरमाली लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~सम्मानवीष्ट लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~राजा लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~दृष्टिल्यापी शहरगांगरामराम~~

~~लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

~~लक्ष्मीनाथ राजा लक्ष्मीनाथ~~

(18C)

(79)

कांडोन्दमारावती १३४६

संग्रह संस्कारण तथा निपटारण

८८

"Joint Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pralsuva, Mumbai"





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com